आवश्यक निवेदन

प्रस्तुत अध्ययन सामग्री, तालिकाएँ एवं चित्र आदि श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा द्वारा तैयार किये गए हैं |

इनका अन्यत्र एवं अन्य भाषा में उपयोग करने के पूर्व उनसे अनिवार्यत: संपर्क कर लें |

मार्गणा महा-अधिकार

आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती

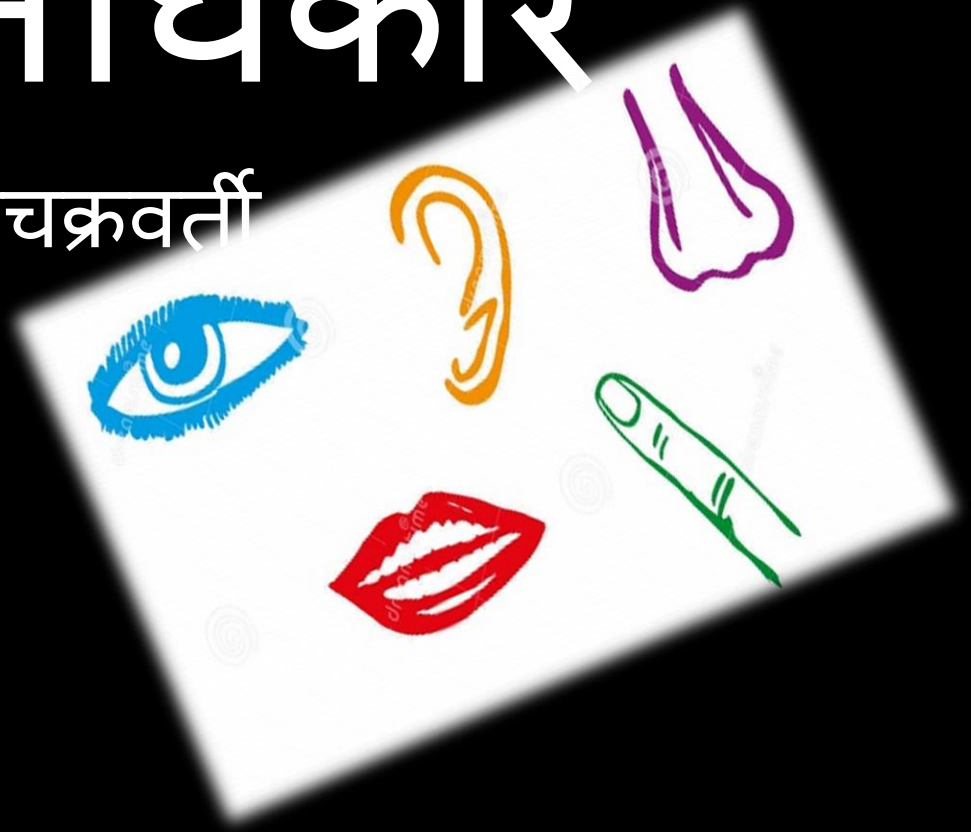

गाथा 1 : मंगलाचरण

सिद्धं सुद्धं पणमिय जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं।
गुणरयणभूसणुदयं जीवस्स परूवणं वोच्छं॥

- जो सिद्ध, शुद्ध एवं अकलंक हैं एवं
- जिनके सदा गुणरूपी रत्नों के भूषणों का उदय रहता है,
- ऐसे श्री जिनेन्द्रवर नेमिचंद्र स्वामी को नमस्कार करके
- जीव की प्ररूपणा को कहूंगा ।

धम्मगुणमग्गणाहयमोहारिबलं जिणं णमंसित्ता।
मग्गणमहाहियारं, विविहहियारं भणिस्सामो॥140॥

- अर्थ - सम्यग्दर्शनादि अथवा उत्तम क्षमादि धर्मरूपी धनुष और
- ज्ञानादि गुणरूपी प्रत्यंचा-डोरी, तथा
- चौदह मार्गणारूपी बाणों से
- जिसने मोहरूपी शत्रु के बल-सैन्य को नष्ट कर दिया है ऐसे श्री जिनेन्द्रदेव को नमस्कार करके
- मैं उस मार्गणा महाधिकार का वर्णन करूँगा जिसमें कि और भी विविध अधिकारों का अन्तर्भाव पाया जाता है ॥140॥

जाहि व जासु व जीवा, मग्गिज्जंते जहा तहा दिट्ठा।
ताओ चोदस जाणे सुयणाणे मग्गणा होंति॥141॥

- अर्थ - प्रवचन में जिस प्रकार से देखे हों उसी प्रकार से जीवादि पदार्थों का जिन भावों के द्वारा अथवा जिन पर्यायों में विचार-अन्वेषण किया जाय उनको ही मार्गणा कहते हैं।
- उनके चौदह भेद हैं ऐसा समझना चाहिये ॥141॥

मार्गणा किसे कहते हैं ?

- मार्गण शब्द का अर्थ है – अन्वेषण, खोजना

- जिन परिणामों के द्वारा जीव का अन्वेषण किया जाए अथवा जिन पर्यायों में जीव का अन्वेषण किया जाए, उन्हें मार्गणा कहते हैं ।

गइइंदियेसु काये, जोगे वेदे कसायणाणे य।
संजमदंसणलेस्सा, भवियासम्मत्तसण्णि आहारे॥142॥

- अर्थ - गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, संयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञी, आहार – ये चौदह मार्गणाएँ हैं ॥142॥

14 मार्गणायें

1. गति
2. इन्द्रिय
3. काय
4. योग
5. वेद
6. कषाय
7. ज्ञान
8. संयम
9. दर्शन
10. लेश्या
11. भव्य
12. सम्यक्त्व
13. संज्ञी
14. आहार

सांतर-निरंतर मार्गणा

सान्तर निरंतर मार्गणा

सांतर मार्गणा

- किसी मार्गणा में किसी समय एक भी जीव न हो, उस मार्गणा को सान्तर मार्गणा कहते हैं ।

निरंतर मार्गणा

- जिस मार्गणा में प्रतिसमय जीव पाये जाते हैं, जिसमें कभी भी जीवों का अभाव नहीं होता, उसे निरंतर मार्गणा कहते हैं ।

उवसम सुहुमाहारे, वेगुव्वियमिस्स णरअपज्जत्ते।
सासणसम्मे मिस्से, सांतरगा मग्गणा अट्ठ॥143॥

अर्थ - उपशम सम्यक्त्व, सूक्ष्मसांपराय संयम, आहारक काययोग, आहारकमिश्रकाययोग, वैक्रियिक मिश्रकाययोग, अपर्याप्त-लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य, सासादन सम्यक्त्व और मिश्र – ये आठ सान्तर मार्गणाएँ हैं ॥143॥

मूल मार्गणा संबंधी नियम

- सारी मूल मार्गणाएं निरन्तर ही हैं ।
  - याने गति मार्गणा में कभी जीवों का अभाव नहीं होता ।
  - इन्द्रिय मार्गणा में कभी जीवों का अभाव नहीं होता ।
- इस ही प्रकार सारी मार्गणाओं में जीव सदैव रहते हैं ।

उत्तर मार्गणा संबंधी नियम

- परन्तु मार्गणाओं के उत्तर भेद में अन्तर संभव हैं ।
  - जैसे उपशम सम्यक्त्व मार्गणा में अन्तर हो सकता है,
  - याने किसी काल में कोई भी जीव उपशम सम्यक्त्वी ना हो । यह संभव है । अथवा
  - आहारक मिश्र में भी किसी काल में कोई भी जीव ना हो – यह संभव है ।
- ऐसी मार्गणा सांतर मार्गणा कहलाती है ।

8 सांतर मार्गणा

उपशम सम्यक्त्व	सूक्ष्म साम्पराय	आहारक काययोग	आहारक मिश्र काययोग
वैक्रियिक मिश्र काययोग	लब्धि-अपर्याप्त मनुष्य	सासादन सम्यक्त्व	मिश्र

सांतर मार्गणा किस मूल मार्गणा का भेद है?

सांतर मार्गणा	मूल मार्गणा
लब्धि-अपर्याप्त मनुष्य	गति मार्गणा
सासादन	सम्यक्त्व मार्गणा
मिश्र	सम्यक्त्व मार्गणा
उपशम सम्यक्त्व	सम्यक्त्व मार्गणा
सूक्ष्म-साम्पराय	संयम मार्गणा
आहारक	योग मार्गणा
आहारक मिश्र	योग मार्गणा
वैक्रियक मिश्र	योग मार्गणा

सत्त दिणा छम्मासा, वासपुधत्तं च बारस मुहुत्ता।
पल्लासंखं तिण्हं, वरमवरं एगसमयो दु॥144॥

- अर्थ - उक्त आठ अन्तरमार्गणाओं का उत्कृष्ट काल क्रम से
- सात दिन, छः महीना, पृथक्त्व वर्ष, पृथक्त्व वर्ष, बारह मुहूर्त और अन्त की तीन मार्गणाओं का काल पल्य के असंख्यातवें भाग है।
- और जघन्य काल सबका एक समय है ॥144॥

पढमुवसमसहिदाए, विरदाविरदीए चोद्दसा दिवसा।
विरदीए पण्णरसा, विरहिदकालो दु बोधव्वो॥145॥

- अर्थ - प्रथमोपशम सम्यक्त्व सहित पंचम गुणस्थान का उत्कृष्ट विरहकाल चौदह दिन और छठे-सातवें गुणस्थान का उत्कृष्ट विरहकाल पंद्रह दिन समझना चाहिये ॥145॥

कब तक अन्तर रह सकता है ?

जघन्य

- कम-से-कम अन्तर

उत्कृष्ट

- अधिक-से-अधिक अन्तर

सांतर मार्गणाओं का अंतर

मूल मार्गणा	सांतर मार्गणा	अंतर		
		उत्कृष्ट		जघन्य
गति	लब्धि-अपर्याप्त मनुष्य	पल्य / असंख्यात		सभी का एक समय
सम्यक्त्व	सासादन	,,		
	मिश्र	,,		
	उपशम सम्यक्त्व	7 दिन	(चतुर्थ गुणस्थान का)	
		14 दिन	(पंचम ,,)	
		15 दिन / (अथवा 24 दिन)	(छठे-सातवें ,,)	

सांतर मार्गणाओं का अंतर

मूल मार्गणा	सांतर मार्गणा	अंतर	
		उत्कृष्ट	जघन्य
संयम	सूक्ष्म साम्पराय	6 महीना	सभी का एक समय
योग	आहारक	वर्ष पृथक्त्व (3-9)	
	आहारक मिश्र	,,	
	वैक्रियक मिश्र	12 मुहूर्त (इतने काल तक कोई देव / नारकी उत्पन्न न हो)	

गति मार्गणा

गइउदयजपज्जाया चउगइगमणस्स हेउ वा हु गई।
णारयतिरिक्खमाणुसदेवगइ त्ति य हवे चदुधा॥146॥

- अर्थ - गतिनामकर्म के उदय से होने वाली जीव की पर्याय को अथवा चारों गतियों में गमन करने के कारण को गति कहते हैं।
- उसके चार भेद हैं – नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति, देवगति ॥146॥

गति

- गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव की पर्याय को गति कहते हैं ।
- चारों गतियों में गमन करने के कारण को गति कहते हैं ।
  - (याने कारणभूत कर्म को भी गति कहते हैं । परन्तु यहाँ कर्म की विवक्षा नहीं है ।)

गति

नरक गति

तिर्यंच गति

मनुष्य गति

देव गति

ण रमंति जदो णिच्चं, दव्वे खेत्ते य काल-भावे य।
अण्णोण्णेहिं य जम्हा, तम्हा ते णारया भणिया॥147॥

- अर्थ - जो द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव में
- स्वयं तथा परस्पर में
- प्रीति को प्राप्त नहीं होते
- उनको नारत (नारकी) कहते हैं ॥147॥

नरक गति किसे कहते हैं?

- नरक गति नाम कर्म के उदय से
- होने वाली जीव की अवस्था-विशेष को
- नरक गति कहते हैं |

- नरक के अन्य नाम
- नारत, नारक, निरय, निरत

नरक गति किसे कहते हैं?

नारत	• ना+रत = स्वयं अथवा परस्पर प्रीती को प्राप्त नहीं होते • द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव में परस्पर रमते नहीं
नारक	• नरान् = प्राणियों को; कायन्ति= क्लेश पहुंचावें, वह नरक कर्म| उस कर्म से जो उत्पन्न हो, वह नारक
निरय	• नि: + अय = जिनका पुण्यकर्म चला गया है
निरत	• नि + रत = जो हिंसादि असमीचीन कार्यों में रत हैं

7 नरक

- रत्नप्रभा
- शर्कराप्रभा
- बालुकाप्रभा
- पंकप्रभा
- धूमप्रभा
- तमप्रभा
- महातमप्रभा

तिरियंति कुडिलभावं, सुविउलसण्णा णिगिट्ठिमण्णाणा।
अच्चंतपावबहुला, तम्हा तेरिच्छया भणिया॥148॥

- अर्थ - जो मन वचन काय की कुटिलता को प्राप्त हो,
- जिनकी आहारादि विषयक संज्ञा दूसरे मनुष्यों को अच्छी तरह प्रकट हो,
- जो निकृष्ट हों,
- जो अज्ञानी हों तथा
- जिनमें अत्यन्त पाप का बाहुल्य पाया जाय उनको तिर्यंच कहते हैं ॥148॥

मण्णंति जदो णिच्चं, मणेण णिउणा मणुक्कडा जम्हा।
मण्णुब्भवा य सव्वे, तम्हा ते माणुसा भणिदा॥149॥

- अर्थ - जो नित्य ही हेय-उपादेय, तत्त्व-अतत्त्व, आप्त-अनाप्त, धर्म-अधर्म आदि का विचार करें और
- शिल्पकला आदि में भी कुशल हों,
- जो पूर्वोक्त मन के विषय में उत्कृष्ट हों अर्थात् जो मन के द्वारा गुण-दोषादि का विचार स्मरण आदि कर सकें, तथा
- युग की आदि में जो मनुओं से उत्पन्न हों
- उनको मनुष्य कहते हैं ॥149॥

सामण्णा पंचिंदी, पज्जत्ता जोणिणी अपज्जत्ता।
तिरिया णरा तहावि य, पंचिंदियभंगदो हीणा॥150॥

अर्थ - तिर्यंचों के पाँच भेद होते हैं। सामान्य तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच, योनिनी तिर्यंच और अपर्याप्त तिर्यंच।

- इन्हीं पाँच भेदों में से पंचेन्द्रिय के एक भेद को छोड़कर बाकी के ये ही चार भेद मनुष्यों के होते हैं ॥150॥

5 प्रकार के तिर्यंच

तिर्यंच (सामान्य) (1)

पंचेन्द्रिय (2)

एकेंद्रिय से चतुरिंद्रिय

पर्याप्त (3)

अपर्याप्त (5)

पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी

योनिनी (स्त्रीवेदी) (4)

4 प्रकार के मनुष्य

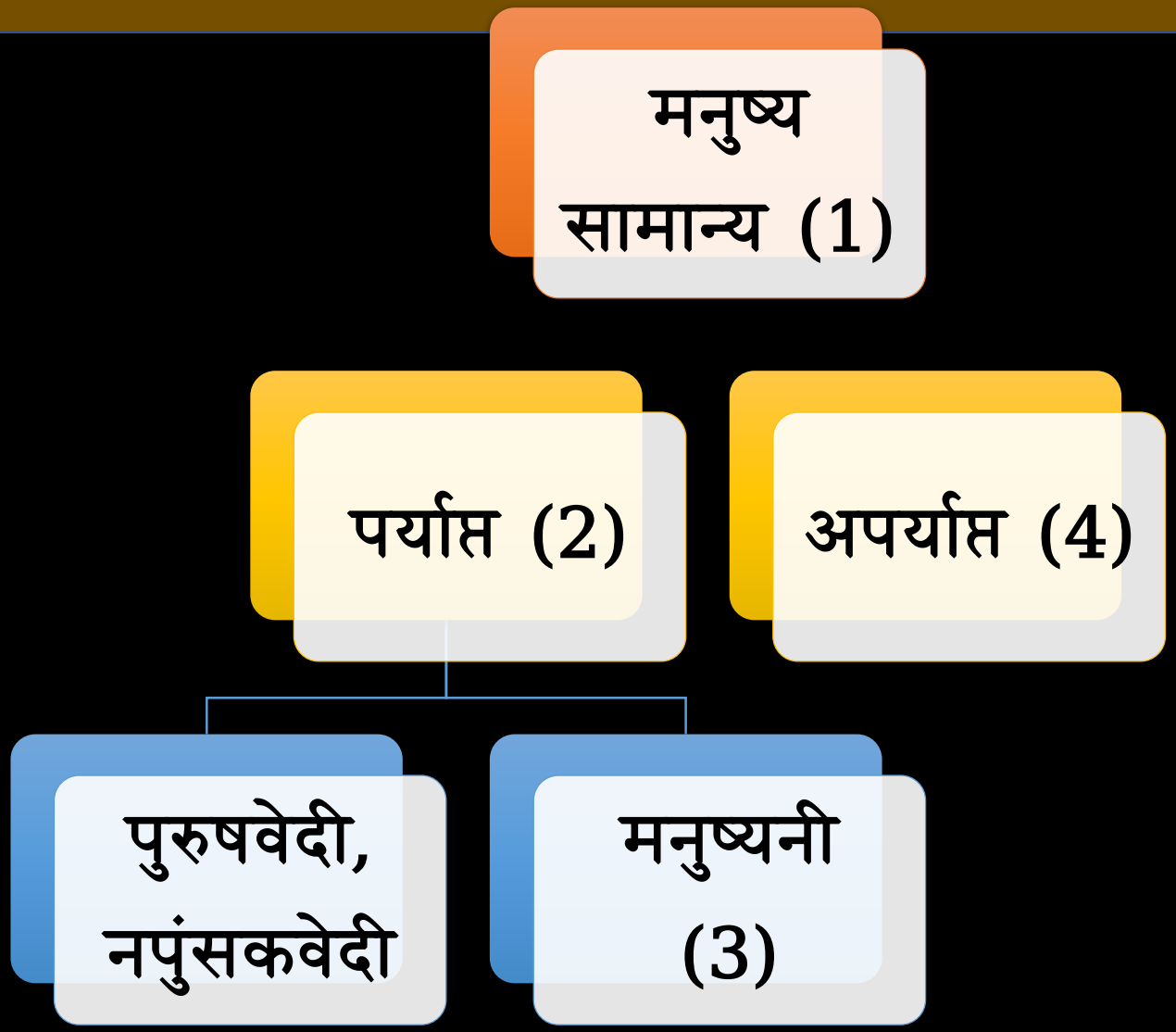

दीव्वंति जदो णिच्चं, गुणेहिं अट्ठेहिं दिव्वभावेहिं।
भासंतदिव्वकाया, तम्हा ते वण्णिया देवा॥151॥

अर्थ - जो देवगति में होनेवाले या पाये जानेवाले परिणामों-परिणमनों से सदा सुखी रहते हैं और

- जो अणिमा, महिमा आदि आठ गुणों (ऋद्धियों) के द्वारा सदा अप्रतिहतरूप से विहार करते हैं और
- जिनका रूप, लावण्य, यौवन आदि सदा प्रकाशमान रहता है,
- उनको परमागम में देव कहा है ॥151॥

देव गति

क्रीड़ा	• पर्वतों, वनों, महासमुद्रों में विहार
विजिगीषा	• बलवानों को भी जीतने का भाव रखना
द्युति	• विशिष्ट दीप्ति को धारण करना
स्तुति	• पंच परमेष्ठी आदि की वन्दना
मोद	• पंचेन्द्रिय के विषय-भोगों से मुदित रहना

देव

- भवनवासी
- व्यंतर
- ज्योतिषी
- वैमानिक

जाइजरामरणभया, संजोगविजोगदुक्खसण्णाओ।
रोगादिगा य जिस्से, ण संति सा होदि सिद्धगई॥152॥

अर्थ - एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक पाँच प्रकार की जाति,

- बुढ़ापा, मरण, भय,
- अनिष्ट संयोग, इष्ट वियोग, इनसे होने वाले दुःख,
- आहारादि विषयक संज्ञाएँ-वांछाएँ और
- रोग आदि की व्याधि इत्यादि विरुद्ध विषय
- जिस गति में नहीं पाये जाते
- उसको सिद्ध गति कहते हैं ॥152॥

चारों गति की संख्याएं

सामण्णा णेरइया, घणअंगुलविदियमूलगुणसेढी।
विदियादि वारदसअड, छत्तिदुणिजपदहिदा सेढी॥153॥

- अर्थ - सामान्यतया सम्पूर्ण नारकियों का प्रमाण घनांगुल के दूसरे वर्गमूल से गुणित जगच्छ्रेणी प्रमाण है।
- द्वितीयादि पृथिवियों में रहने वाले-पाये जाने वाले नारकियों का प्रमाण क्रम से अपने बारहवें, दशवें, आठवें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूल से भक्त जगच्छ्रेणी प्रमाण समझना चाहिये ॥153॥

नारकियों की संख्या

- घनांगुल का द्वितीय मूल × जगत् श्रेणी
- $\sqrt[4]{\text{घनांगुल}} \times \text{श्रेणी}$
- उदाहरण: मानाकि श्रेणी=65536; घनांगुल=16
- तो $\sqrt{\text{घनांगुल}} = \sqrt{16} = 4$; $\sqrt[4]{\text{घनांगुल}} = \sqrt[4]{16} = 2$
- तो $\sqrt[4]{\text{घनांगुल}} \times \text{श्रेणी} = 2 \times 65536 = 131072$
- ऐसे ही वास्तविक गणित में जानना

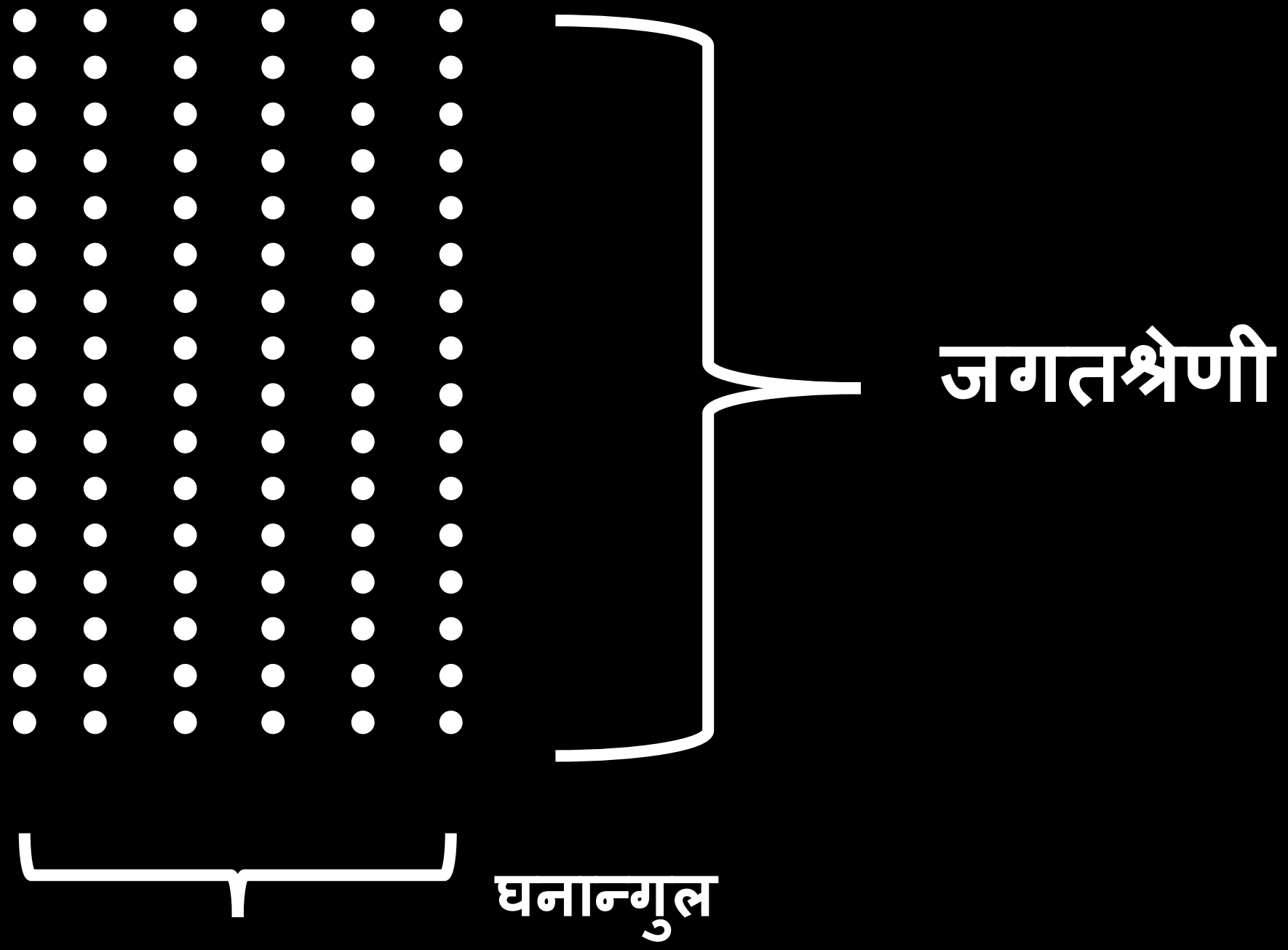
जगतश्रेणी
घनान्गुल

संख्याओं सम्बन्धी नियम

- इतने नारकी अधिकतम हो सकते हैं ।
- इतने ही हमेशा हो यह नियम नहीं है ।
- सभी संख्याओं मे यह नियम जानना । सभी संख्याएं उत्कृष्ट अपेक्षा बताई हैं ।

छह पृथिवियों के नारकियों की संख्या

पृथ्वी	संख्या	पृथ्वी	संख्या
द्वितीय पृथ्वी	$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{12}]{\text{श्रे}}}$	पंचम पृथ्वी	$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{6}]{\text{श्रे}}}$
तीसरी पृथ्वी	$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{10}]{\text{श्रे}}}$	छठी पृथ्वी	$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{3}]{\text{श्रे}}}$
चतुर्थ पृथ्वी	$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{8}]{\text{श्रे}}}$	सातवीं पृथ्वी	$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{2}]{\text{श्रे}}}$

सातवे नरक के नारकी कितने?

$$\text{श्रेणी} = \sqrt{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}$$

$$\sqrt{\text{श्रेणी}} = \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}}$$

$$\text{तो श्रेणी} = \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}$$

इसे सूत्र में रखने पर:

$$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^2]{\text{श्रे}}} = \frac{\sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}}{\sqrt[2^2]{\text{श्रे}}} = \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}$$

छठे नरक के नारकी

- $\text{श्रेणी} = \sqrt{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}$
- $\sqrt{\text{श्रेणी}} = \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}}$

$$\sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} = \sqrt[2^3]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^3]{\text{श्रेणी}}$$

$$\text{तो श्रेणी} = \sqrt[2^3]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^3]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}$$

इसे सूत्र में रखने पर:

- $\dfrac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^3]{\text{श्रे}}} = \dfrac{\sqrt[2^3]{\text{श्रेणी}}\ \sqrt[2^3]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}}{\sqrt[2^3]{\text{श्रे}}}$
- $= \sqrt[2^3]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}$

पाचवें नरक के नारकी

- $\sqrt[2^6]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^5]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^4]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^3]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}$

चौथे नरक के नारकी

- $\sqrt[2^8]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^7]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^6]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^5]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^4]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^3]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^2]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}$

तीसरे नरक के नारकी

$\sqrt[2^{10}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{9}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{8}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{7}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{6}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{5}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{4}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{3}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{2}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}$

दुसरे नरक के नारकी

$\sqrt[2^{12}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{11}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{10}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{9}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{8}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{7}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{6}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{5}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{4}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{3}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt[2^{2}]{\text{श्रेणी}} \times \sqrt{\text{श्रेणी}}$

हेट्ठिमछप्पुढवीणं रासिविहीणो दु सव्वरासी दु।
पढमावणिम्हि रासी, णेरइयाणं तु णिद्दिट्ठो॥154॥

- अर्थ - नीचे की छह पृथिवियों के नारकियों का जितना प्रमाण हो उसको सम्पूर्ण नारक राशि में से घटाने पर जो शेष रहे उतना ही प्रथम पृथ्वी के नारकियों का प्रमाण है ॥154॥

Home-work

- ऐसे ही दूसरे नरक से छठे नरक तक की संख्या पूरी खोल कर निकालना ।

प्रथम पृथ्वी के नारकियों की संख्या

प्रथम पृथ्वी के नारकी = सर्व नारकी — शेष 6 पृथ्वी के नारकी

$$= (\sqrt[4]{\text{घ}} \times \text{श्रेणी}) - \left(\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{12}]{\text{श्रे}}} + \frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{10}]{\text{श्रे}}} + \frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{8}]{\text{श्रे}}} + \frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{6}]{\text{श्रे}}} + \frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{3}]{\text{श्रे}}} + \frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{2}]{\text{श्रे}}}\right)$$

= कुछ कम सर्व नारकी

- शेष 6 पृथ्वीयों के नारकी कितनी जगत्श्रेणी प्रमाण होंगे?
- क्या सब मिलकर भी 6 जगत्श्रेणी प्रमाण या उससे अधिक होंगे?
- इन छहों पृथ्वीयों का जोड़ लगभग $\frac{\text{श्रेणी}}{\sqrt[2^{12}]{\text{श्रेणी}}}+$ होगा ।
- याने 1 जगत्श्रेणी प्रमाण भी नहीं हो पायेगा ।

नरक गति – अल्प-बहुत्व

- सातवें नरक में सबसे कम नारकी होते हैं ।
- उससे अधिक छठे नरक में,
- उससे अधिक पाँचवे नरक में,
- ऐसे क्रम से अधिक होते-होते सबसे अधिक नारकी प्रथम नरक में पाए जाते हैं ।

संसारी पंचक्खा, तप्पुण्णा तिगदिहीणया कमसो।
सामण्णा पंचिंदी, पंचिंदियपुण्णतेरिक्खा॥155॥

- अर्थ - सम्पूर्ण जीवराशि में से सिद्धराशि को घटाने पर संसार राशि का,
- संसारराशि में से तीन गति के जीवों का प्रमाण घटाने पर सामान्य तिर्यंचों का,
- सम्पूर्ण पंचेन्द्रिय जीवों के प्रमाण में से 3 गति सम्बन्धी जीवों का प्रमाण घटाने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंचों तथा
- संपूर्ण पर्याप्तकों के प्रमाण में से तीन गति संबंधी पर्याप्त जीवों का प्रमाण घटाने पर पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचों का प्रमाण प्राप्त होता है ॥155॥

तिर्यंच गति की संख्या - सूत्र

संसार राशि	• संपूर्ण जीवराशि — सिद्ध राशि
तिर्यंच (सामान्य)	• संसार राशि — 3 गति के जीवों की संख्या
पंचेन्द्रिय तिर्यंच	• पंचेन्द्रिय जीव — 3 गति के जीवों की संख्या
पंचेन्द्रिय पर्याप्तक तिर्यंच	• पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव — 3 गति के पर्याप्तक जीवों की संख्या

छस्सयजोयणकदिहदजगपदरं जोणिणीण परिमाणं।
पुण्णूणा पंचक्खा, तिरियअपज्जत्तपरिसंखा॥156॥

- अर्थ - छह सौ योजन के वर्ग का जगतप्रतर में भाग देने से जो लब्ध आवे उतना ही योनिनी तिर्यंचों का प्रमाण है और
- पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में से पर्याप्त तिर्यंचों का प्रमाण घटाने पर जो शेष रहे उतना अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचों का प्रमाण है ॥156॥

तिर्यंच गति - संख्या

योनिनी तिर्यंच

- $\frac{\text{जगत् प्रतर}}{(600\ \text{योजन})^2}$

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त

- पंचेन्द्रिय तिर्यंच — पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच
- (तीसरा सूत्र — चौथा सूत्र)

पंचेन्द्रिय जीव

- $\frac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल}/\text{असंख्यात}}$

योनिनी तिर्यंच - संख्या

- 1 योजन = 7,68,000 अंगुल
- 600 योजन = 600 × 7,68,000 अंगुल
- 600 योजन^2 = 600 × 7,68,000 अंगुल × 600 × 7,68,000 अंगुल
- 600 योजन^2 = 4 × 65536 × 81,000 × 10^7 प्रतरांगुल
- अर्थात् योनिनी तिर्यंच =

$$\frac{\text{जगत् प्रतर}}{4 \times 65536 \times 81{,}000 \times 10^7 \text{ प्रतरांगुल}}$$

तिर्यंच गति का अल्प-बहुत्व

- सबसे कम योनिनी तिर्यंच
- उससे अधिक पंचेन्द्रिय पर्याप्त
- उससे अधिक अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच
- उससे अधिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच
- सबसे अधिक सर्व तिर्यंच

सेढी सूईअंगुलआदिमतदियपदभाजिदेगूणा।
सामण्णमणुसरासी, पंचमकदिघणसमा पुण्णा॥157॥

- अर्थ - सूच्यंगुल के प्रथम और तृतीय वर्गमूल का जगच्छ्रेणी में भाग देने से जो शेष रहे उसमें एक घटाने पर जो शेष रहे उतना सामान्य मनुष्य राशि का प्रमाण है।
- इसमें से द्विरूपवर्गधारा में उत्पन्न पाँचवें वर्ग (बादाल) के घनप्रमाण पर्याप्त मनुष्यों का प्रमाण है ॥157॥

मनुष्य गति - संख्या

$$\text{सारे मनुष्य} = \frac{\text{जगत्श्रेणी}}{\sqrt{\text{सूच्यंगुल}} \times \sqrt[2^3]{\text{सूच्यंगुल}}} - 1$$

अर्थात् असंख्यात, परन्तु जगत्श्रेणी से कम ।

पर्याप्त मनुष्यों की संख्या

(बादाल)^3 = पर्याप्त मनुष्य

* बादाल = (पणट्ठी)^2

* बादाल = $(65536)^2$

तो मनुष्य संख्या = $(65536^2)^3$

= $(65536)^6$

अथवा $(2^{16})^6 = 2^{96}$

तललीनमधुगविमलंधूमसिलागाविचोरभयमेरू।
तटहरिखझसा होंति हु, माणुसपज्जत्तसंखंका॥158॥

- अर्थ - तकार से लेकर सकार पर्यन्त जितने अक्षर इस गाथा में बताये हैं, उतने ही अंक प्रमाण पर्याप्त मनुष्यों की संख्या है ॥158॥

अक्षरों से संख्या निकालने की विधि

क—1	ट—1	प—1	य—1
ख—2	ठ—2	फ—2	र—2
ग—3	ड—3	ब—3	ल—3
घ—4	ढ—4	भ—4	व—4
ङ—5	ण—5	म—5	श—5
च—6	त—6		ष—6
छ—7	थ—7		स—7
ज—8	द—8		ह—8
झ—9	ध—9		
सारे स्वर = 0;	न, ञ = 0;	मात्राओं का कोई अंक नहीं	

मनुष्य गति की संख्या

- 7,9228162,5142643,3759354,3950336 संख्या प्रमाण पर्याप्त मनुष्य है ।
  - ❖=(बादाल)^3
- कितने अंक प्रमाण ?
  - ❖29 अंक प्रमाण संख्या ।

पज्जत्तमणुस्साणं, तिचउत्थो माणुसीण परिमाणं।
सामण्णा पुण्णूणा, मणुवअपज्जत्तगा होंति॥159॥

- अर्थ - पर्याप्त मनुष्यों का जितना प्रमाण है उसमें तीन चौथाई मानुषियों का प्रमाण है।
- सामान्य मनुष्यराशि में से पर्याप्तकों का प्रमाण घटाने पर जो शेष रहे उतना ही अपर्याप्त मनुष्यों का प्रमाण है ॥159॥

मनुष्यिनी - संख्या

मनुष्यिनी = पर्याप्त मनुष्य × $\frac{3}{4}$

$$2^{96} \times \frac{3}{4} = 2^{94} \times 3$$

याने कुल पर्याप्त मनुष्यों का 75% मनुष्यिनी है ।

अपर्याप्त मनुष्य - संख्या

अपर्याप्त मनुष्य = सामान्य मनुष्य — पर्याप्त मनुष्य

$$= \frac{\text{जगत्श्रेणी}}{\sqrt{\text{सूच्यंगुल}} \times \sqrt[2^3]{\text{सूच्यंगुल}}} - 1 - (\text{बादाल})^3$$

अर्थात् सामान्य मनुष्य संख्या से कुछ कम

मनुष्य गति – अल्प-बहुत्व

- सबसे कम पर्याप्त पुरुषवेदी, नपुंसक वेदी मनुष्य
- उससे अधिक पर्याप्त मनुष्यिनी
- उससे अधिक पर्याप्त मनुष्य
- उससे अधिक अपर्याप्त मनुष्य
- सबसे अधिक सर्व मनुष्य

तिण्णिसयजोयणाणं, वेसदछप्पण्ण अंगुलाणं च।
कदिहदपदरं वेंतर, जोइसियाणं च परिमाणं॥160॥

- अर्थ - तीन सौ योजन के वर्ग का जगतप्रतर में भाग देने से जो लब्ध आवे उतना व्यन्तर देवों का प्रमाण है और
- 256 प्रमाणांगुलों के वर्ग का जगतप्रतर में भाग देने से जो लब्ध आवे उतना ज्योतिषियों का प्रमाण है ॥160॥

देवगति की संख्या

व्यंतर देव

- $\frac{\text{जगत् प्रतर}}{(300\ \text{योजन})^2}$

ज्योतिषी देव

- $\frac{\text{जगत् प्रतर}}{(256\ \text{सूच्यंगुल})^2} = \frac{\text{जगत् प्रतर}}{65536\ \text{प्रतरांगुल}}$

व्यंतर देव - संख्या

- 300 योजन ^{2} = 300 × 7,68,000 अंगुल × 300 × 7,68,000 अंगुल
- 300 योजन ^{2} = 65536 × 81,000 × 10^7 प्रतरांगुल
- अर्थात् व्यंतर देव = $\frac{\text{जगत् प्रतर}}{65536 \times 81{,}000 \times 10^7 \text{ प्रतरांगुल}}$
- याने व्यंतरों से ज्योतिषी देव 81,000 × 10^7 गुणे हैं |

घणअंगुलपढमपदं, तदियपदं सेढिसंगुणं कमसो।
भवणे सोहम्मदुगे, देवाणं होदि परिमाणं॥161॥

- अर्थ - जगच्छ्रेणी के साथ घनांगुल के प्रथम वर्गमूल का गुणा करने से भवनवासी और
- तृतीय वर्गमूल का गुणा करने से सौधर्मद्विक - सौधर्म और ऐशान स्वर्ग के देवों का प्रमाण निकलता है ॥161॥

देवगति की संख्या

भवनवासी	• श्रेणी x $\sqrt{\text{घनांगुल}}$
सौधर्म-ऐशान	• श्रेणी x $\sqrt[2^3]{\text{घनांगुल}}$

तत्तो एगारणवसगपणचउणियमूलभाजिदा सेढी। पल्लासंखेज्जदिमा, पत्तेयं आणदादिसुरा॥162॥

- अर्थ - इसके अनंतर अपने (जगच्छ्रेणी के) ग्यारहवें, नववें, सातवें, पांचवें, चौथे वर्गमूल से भाजित जगच्छ्रेणी प्रमाण तीसरे कल्प से लेकर बारहवें कल्प तक के देवों का प्रमाण है।
- आनतादिक से लेकर आगे के देवों का प्रमाण पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण है ॥162॥

वैमानिक देवों की संख्या

स्वर्ग	संख्या	स्वर्ग	संख्या
3-4 स्वर्ग	$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{11}]{\text{श्रे}}}$	9-10 स्वर्ग	$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{5}]{\text{श्रे}}}$
5-6 स्वर्ग	$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{9}]{\text{श्रे}}}$	11-12 स्वर्ग	$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{4}]{\text{श्रे}}}$
7-8 स्वर्ग	$\frac{\text{श्रे}}{\sqrt[2^{7}]{\text{श्रे}}}$	13-16 स्वर्ग, 9 ग्रैवेयक, 9 अनुदिश	प्रत्येक $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$

तिगुणा सत्तगुणा वा, सव्वट्ठा माणुसीपमाणादो।
सामण्णदेवरासी, जोइसियादो विसेसाहिया॥163॥

- अर्थ - मानुषियों का जितना प्रमाण है उससे तिगुना अथवा सातगुना सर्वार्थसिद्धि के देवों का प्रमाण है।
- ज्योतिषी देवों का जितना प्रमाण है उससे कुछ अधिक सम्पूर्ण देवराशि का प्रमाण है ॥163॥

देवगति की संख्या

सर्वार्थसिद्धि

- मनुष्यिनी × 3 अथवा
- मनुष्यिनी × 7

सर्व देव राशि

- चारों निकायों का जोड़ अर्थात्
- ज्योतिषी देवों से कुछ अधिक

देवगति का अल्प–बहुत्व

- सबसे कम सर्वार्थसिद्धि के देव
- 4 अनुत्तर विमान के देव
- उनसे अधिक नव अनुदिश
- उनसे अधिक नव ग्रैवेयक
- उनसे अधिक आरण-अच्युत
- ऐसे क्रम से सौधर्म-ऐशान तक अधिक-अधिक
- उससे अधिक भवनवासी
- उससे अधिक व्यंतर
- सबसे अधिक ज्योतिषी

इन सब संख्याओं को जानने का क्या लाभ है ?

Home-work

- चारों गतियों की संख्याओं को घटते से बढ़ते क्रम से जमाओ ।

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में

Presentation developed by

Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 0731-2410880 , 94066-82889